ISSN 0970-5198

पो० रजि० नं० UA/NTI/03/2015-2017

किसान भारती

मूल्य : ₹15.00 नवम्बर 2016 वार्षिक मूल्य : ₹150.00

अन्नं बहुकुर्वीत तद्व्रतम्!

किसान भारती

वर्षः 49, अंकः 01

नवम्बर 2016

संरक्षक
डॉ. जे. कुमार
कुलपति

संपादक मंडल
डॉ ए.के. उपाध्याय
डॉ टी.पी. सिंह
डॉ आशुतोष सिंह
डॉ अनीता रानी
डॉ विपुल गुप्ता

संपादक
डॉ प्रभाशंकर शुक्ल
डॉ अमरदीप

(इस पत्रिका में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के निजी हैं। प्रकाशक/संपादक इसके लिए उत्तरदायी नहीं हैं।)

विज्ञापन संबंधी जानकारी के लिए सम्पर्क करें:
वी.के. सिंह
व्यवसाय प्रबन्धक

bmpantuniversity@gmail.com
गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर–263145 (उत्तराखण्ड)

एक प्रति का मूल्य	: 15
वार्षिक सदस्यता शुल्क	: 150
5 वर्षीय सदस्यता शुल्क	: 675
10 वर्षीय सदस्यता शुल्क	: 1200
15 वर्षीय सदस्यता शुल्क	: 1800

इस अंक में .....

संपादकीय
खोज खबर खेती की 03

1. **प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना** 04
रूँचे रानी गंगवार, अजय कुमार त्रिपाठी, एच.एन. सिंह एवं श्वेता चौधरी
2. **किसान क्रेडिट कार्ड योजना से कृषि विकास** 08
अर्पिता शर्मा एवं अदिता शर्मा
3. **गेहूँ उत्पादन की उन्नत तकनीकें** 13
विजय पाल सिंह, राजीव कुमार, डी.एस. पाण्डेय, अमित कैसरवानी, इन्द्रपाल सिंह एवं माया कृष्णा
4. **पर्वतीय क्षेत्रों में समन्वित कृषि प्रणाली से लाभः एक सफल कथा** 18
रेनू जेठी, रघु बी आर एवं लक्ष्मी कांत
5. **मशरूम : परिरक्षण एवं मूल्य संवर्धन** 21
ओमवीर सिंह एवं सर्वेश कुमार मिश्रा
6. **चारे में उपस्थित हानिकारक तत्वों से पशुओं को बचायें** 25
बलबीर सिंह खद्दा एवं बृजेश सिंह
7. **अधिक आय हेतु गेंदे की उत्पादन तकनीकें** 29
रंजन श्रीवास्तव, जया कुमारी, भगवान दास भुज एवं सतीश चन्द
8. **पर्वतीय क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण : एक दृष्टिकोण** 33
शेफाली मैसी एवं अनुपमा पाण्डे
9. **बरसीम के हरे चारे से दुग्ध उत्पादन बढ़ायें** 38
महेन्द्र सिंह पाल एवं सुरेश कुमार जैन
10. **गन्ना किसानो की एक और चुनौती : पोखा बोंग बीमारी** 42
गीता शर्मा, अंशुल आर्या एवं अजित कुमार

प्रकाशक : संचार केंद्र,
गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर–263145,
ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

पर्वतीय क्षेत्रों में समन्वित कृषि प्रणाली से लाभः एक सफल कथा

[1]रेनू जेठी, [1]रघु बी आर एवं [2]लक्ष्मी कांत

उत्तराखण्ड के मैदानी क्षेत्रों की तुलना में पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि उत्पादकता बहुत कम है। पर्वतीय क्षेत्रों में अधिकतर छोटे किसान है जो परंपरागत तरीके से कृषि करते है। छोटे व बिखरे खेत, सिंचाई की सीमित सुविधाऐं एवं अन्य कृषि संबंधी समस्याओं के कारण अधिकतर किसान पलायन कर चुके हैं। परन्तु श्री प्रभाकर भाकुनी जैसे कुछ प्रगतिशील किसान भी हैं, जिन्होंने उन्नत तकनीकों से कृषि के अलावा मुर्गीपालन, पशुपालन, मत्स्यपालन एवं फूलों की खेती को व्यवसाय की तौर पर अपनाया एवं अन्य किसानों के लिए प्रेरणास्रोत बने।

उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में प्राकृतिक बाधाओं के कारण कृषि के क्षेत्र में उन्नति करना एक बहुत बड़ी चुनौती है। पर्वतीय क्षेत्रों में अधिकतर खेत छोटे व बिखरे हुए हैं, इसके अलावा सिंचाई की सीमित सुविधाऐं, कमजोर परिवहन सुविधा एवं फसलों की कम उत्पादकता जैसी कई समस्याओं से किसानों को आये दिन जूझना पड़ता है। इस परिस्थिति को देखते हुए इन क्षेत्रों के अधिकतर पुरुष आजीविका के लिए अन्य स्थानों में पलायन कर चुके हैं। वहीं कुछ ऐसे किसान भी हैं जिन्होंने खेती में नई तकनीकों का समावेश करके उसे व्यवसाय के तौर पर अपनाया एवं अन्य किसानों के लिए प्रेरणा के स्रोत बने।

ग्राम बसौली, अल्मोड़ा जिला मुख्यालय से 32 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस क्षेत्र के एक प्रगतिशील किसान श्री प्रभाकर भाकुनी ने समन्वित कृषि प्रणाली के अंतर्गत खेती में नई तकनीकों के समावेश के साथ ही मछली पालन, मुर्गी पालन, पशुपालन एवं अन्य व्यवसायों को सफलतापूर्वक अपनाया एवं आर्थिक लाभ प्राप्त किया। श्री भाकुनी प्रारम्भ में दिल्ली में प्राईवेट कंपनी में नौकरी करते थे। आय कम होने के कारण वे नौकरी छोड़कर अपने गॉव बसौली लौट आये। तीन वर्ष तक उन्होंने बिनसर वन्य जीव विहार में गाईड के रुप में कार्य किया। नौकरी से असंतुष्ट होकर वर्ष 2009 से इन्होने व्यवसायिक खेती को अपनाया। इनके द्वारा कुल 72 नाली (1.4 हैक्टेयर) भूमि में खेती की जाती हैं जिसमें से अधिकतर भूमि अन्य किसानों से पट्टे पर ली गई है।

अनाज एवं दलहन उत्पादन

अनाज एवं दलहन का अधिक उत्पादन करने हेतु श्री भाकुनी ने उन्नतशील, अधिक उपज देने वाली विभिन्न प्रजातियों का चयन किया। इनके द्वारा 0.2 हैक्टेयर भूमि में आलू एवं गडेरी का 10–12 क्विंटल उत्पादन किया जाता है। विवेकानन्द पर्वतीय कृशि अनुसंधान संस्थान, अल्मोड़ा द्वारा वर्श 2014–2015 में संस्थान की गेहूँ की उन्नत प्रजाति वी. एल गेहूँ 907 के अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन हेतु इन्हें चुना गया। इन्होंने वी. एल. गेहूँ 907 को प्रदर्शन हेतु 1.2 हैक्टेयर भूमि में लगाया एवं आर्थिक लाभ प्राप्त किया। वी. एल. गेहूँ 907 का उत्पादन स्थानीय प्रजाति से 58 प्रतिशत अधिक रहा। क्षेत्र के अधिकतर किसान परंपरागत फसल प्रजातियों को ही अपने खेतों में लगाते हैं। अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के परिणाम स्वरूप घर के बीज की अपेक्षा कृषि विशेषज्ञों द्वारा दिए गए बीज से बहुत अच्छा उत्पादन प्राप्त हुआ। इससे प्रेरित हो कर कई किसानों ने श्री भाकुनी से वी. एल. गेहूँ 907 का बीज क्रय किया है। इसके साथ ही इन्होंने क्षेत्र के अन्य

[1]वैज्ञानिक, [2]प्रधान वैज्ञानिक , भाकृअनुप–विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अल्मोडा, उत्तराखण्ड

किसानों को भी उन्नत प्रजाति के बीज के प्रयोग के लिए प्रोत्साहित किया। जिससे उत्साहित हो कर अन्य किसानों भी इस बार खरीफ में धान की उन्नत प्रजाति वी.एल धान 85 का उत्पादन कर रहे हैं। श्री भाकुनी हर वर्श लगभग 0.2 हैक्टेयर भूमि में दलहनी फसलों जैसे सोयाबीन, गहत एवं मसूर का उत्पादन करते हैं। वर्तमान में दलहनी फसलों की स्थानीय प्रजाति के स्थान पर उन्नतशील एवं अधिक उपज देने वाली दलहनी फसलों के बीज का प्रयोग किया जा रहा है। संस्थान में बीज उत्पादन विषय पर प्रशिक्षण प्राप्त कर इन्होने 0.5 हैक्टेयर भूमि में बीज उत्पादन हेतु वी.एल भट्ट 65 की बुवाई की है।

पशुपालन, मुर्गीपालन एवं मत्स्यपालन

श्री भाकुनी ने पशुपालन विभाग से सम्पर्क स्थापित कर अच्छे नस्ल के पशु खरीदे। वर्तमान में इनके पास दो अच्छी नस्ल की गाय एवं दो भैंसे हैं, जिससे प्राप्त 20 लीटर दूध यह स्थानीय बाजार में उपलब्ध कराते हैं। इस प्रकार दुग्ध उत्पादन द्वारा प्रतिदिन लगभग साढे तीन से चार सौ रुपये तक का लाभ ले रहे हैं। पशुपालन में इनकी लगन एवं सक्रियता को देखते हुए वर्ष 2013–2014 में पशुपालन विभाग द्वारा किसान सम्मान प्रदान किया गया। इसके अलावा इनके द्वारा मुर्गीपालन का भी सफल प्रदर्शन किया जा रहा है। मुर्गीपालन से आथिक लाभ के साथ साथ परिवार की पोषण स्थिति में भी सुधार आया है। अब वर्ष के अधिकतर महिनों मे अड़ा और मांस की उपलब्धता रहती है। अच्छे उत्पादन एवं अधिक लाभ अर्जित करने हेतु इनके द्वारा समय समय पर पशुपालन विभाग द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया। इससे प्राप्त अण्डा और मांस को स्थानीय बाजार में भी बेचा जा रहा है। इन्होने छोटे एवं पर्वतीय किसानों को यह सिद्ध कर के दिखाया की छोटे व गरीब किसानों के लिए मुर्गीपालन एक लाभकारी एवं सरल व्यवसाय है। इसके अलावा विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत इनके द्वारा मत्स्यपालन का भी सफल प्रदर्शन किया जा रहा है।

चारा उत्पादन

उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि योग्य भूमि एवं सिंचाई व्यवस्था की कमी के कारण बहुत कम किसान हरे चारा का उत्पादन करते हैं। इस कारण इन क्षेत्रों में हरे चारे का उत्पादन एवं उपलब्धता वर्ष भर समान नहीं रहती। केवल मानसून के चार महीने में हरा चारा उपलब्ध हो पाता है। यहाँ की महिलाओं द्वारा सितम्बर से नवम्बर तक वनों से चारा इकट्ठा किया जाता है जो कि केवल तीन से चार महिनों तक ही जानवरों के खाने के लिए उपलब्ध हो पाता है। चारे की तलाश में महिलाऐं वनों में जोखिम उठाकर ऊँचें वर्षों में चढ जाती हैं जिस कारण कई बार गंभीर चोटें भी आ जाती हैं। चारे की कमी के कारण दूध का उत्पादन में भी कमी रहती है। इस समस्या को दूर करने हेतु श्री भाकुनी द्वारा 0.24 हैक्टेयर भूमि में हरा चारा उत्पादन किया जाता है। इसके अलावा इन्होंने बंजर भूमि में 80 भीमल के पेड़ लगाये हैं जिससे वर्ष के अन्य महीने में भी हरे चारे की उपलब्धता बनी रहे। भीमल के पेड़ से प्राप्त चारे में पोषक तत्व एवं प्रोटीन अधिक मात्रा में होता है। पशुपालन में कुल धन का 2/3 भाग पशु पोषण पर खर्च होता है। ऐसी अवस्था में पशुओं के लिए स्वादिष्ट एवं पोषक हरा चारा वर्ष भर उगाकर पशु पोषण पर आने वाले व्यय को कम किया जा सकता है।

गुलाब एवं लिलियम की खेती

श्री भाकुनी द्वारा सेन्टर फॉर एरोमेटिक प्लांट की सहायता से 0.2 हैक्टेयर भूमि में खेतों के किनारे गुलाब की खेती वर्ष 2010 से भुरु की। गुलाब की

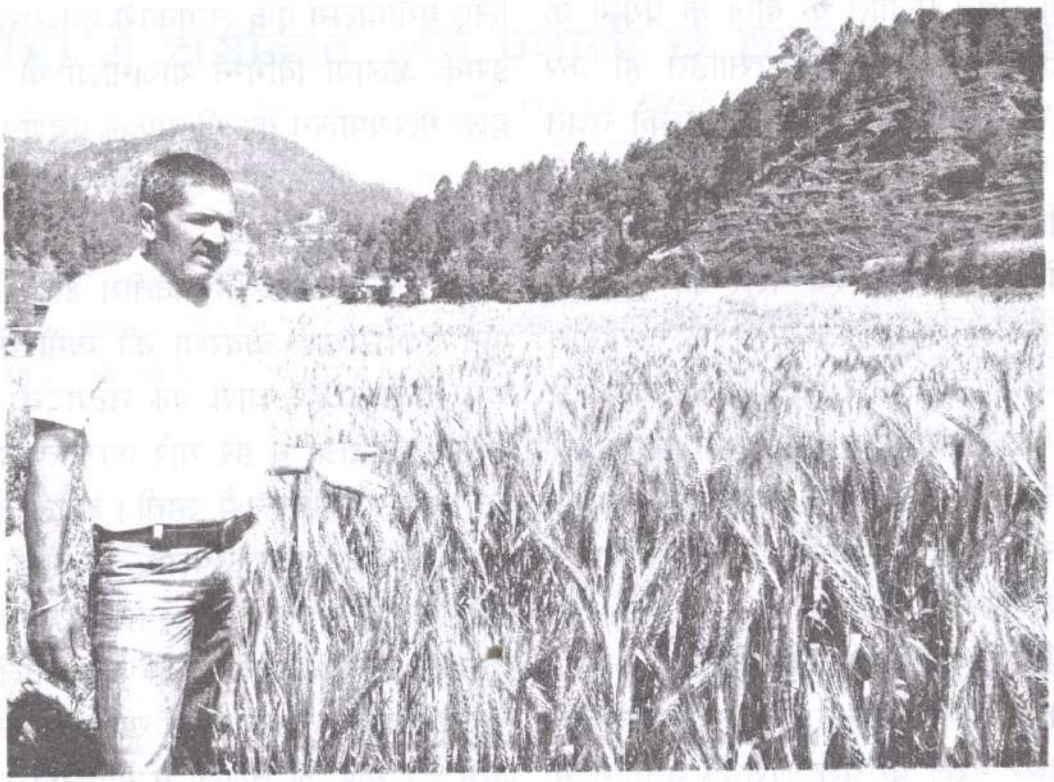

वी.एल गेहूँ 907 के अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन से प्रसन्न श्री प्रभाकर भाकुनी

विकसित प्रजाति ज्वाला एवं हिमरोज को खेतों के किनारे लगाया गया। श्री भाकुनी ने दावा किया कि गुलाब लगाने के फलस्वरुप खेतों में बन्दरों का आतंक कम हुआ है। गुलाब जल का उत्पादन कर इसे उत्तराण्ड डी रोज वाटर–प्राकृतिक गुलाब जल के ब्रांड नाम से विभिन्न स्थानीय बाजार में बेचा जा रहा है। स्थानीय बाजार में इसकी कीमत दो सौ रुपये प्रति लीटर है। इस प्रकार गुलाब की खेती से बन्दरों का आतंक कम होने के साथ ही आर्थिक लाभ भी प्राप्त किया जा रहा है। वर्ष 2010 में ही बागवानी मिशन के अतंर्गत इन्होनें लीलियम की खेती के लिए उत्तराखण्ड ग्रामीण बैंक से 2.5 लाख का ऋण लिया। लीलियम एक तेज़ी से बढने वाला फूल है जो बिकने के लिए 3 महीने में तैयार हो जाता है। श्री भाकुनी द्वारा 670 वर्ग मीटर श्रेत्र के शेड नेट हाउस में लीलियम का उत्पादन किया जा रहा है। एक वर्ष में करीब 800 लीलियम के फूलों का उत्पादन किया जा रहा है जिससे 24 हजार रूपए की आमदनी हो रही है।

श्री प्रभाकर भाकुनी की अन्य उपलब्धियाँ

- मत्स्य पालन में इनकी लगन एवं सक्रियता को देखते हुए वर्ष 2014–15 में मत्स्य विभाग द्वारा किसान सम्मान प्रदान किया गया।
- पशुपालन में इनके द्वारा किए गए कार्यों को देखते हुए वर्ष 2013–2014 में पशुपालन विभाग द्वारा इनको किसान सम्मान प्रदान किया गया।
- उद्यान विभाग द्वारा वर्ष 2010 में श्री भाकुनी को किसान सम्मान प्रदान किया गया।

श्री भाकुनी उन्नत कृषि उत्पादन में एक सफल उत्पादक व प्रेरणास्रोत के रूप मे उभरे हैं और स्थानीय अखबारों, रेडियो व अन्य संचार माध्यमों द्वारा लोकप्रिय हो चुके हैं। भाकुनी जी नौकरी छोड़ स्वयं खेती कर रहे हैं साथ ही दूसरों को पर्वतीय खेती करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। ❑